



?

01 Nov 2025

10:17 PM

Dehradun

Model: Web-MyKundli

Order No: 120673201

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 01/11/2025
दिन _____: शनिवार
जन्म समय _____: 22:17:00 घंटे
इष्ट _____: 39:21:42 घटी
स्थान _____: Dehradun
राज्य _____: Uttarakhand
देश _____: India

अक्षांश _____: 30:19:00 उत्तर
रेखांश _____: 78:03:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:17:48 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 21:59:12 घंटे
वेलान्तर _____: 00:16:28 घंटे
साम्पातिक काल _____: 00:44:06 घंटे
सूर्योदय _____: 06:32:19 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:30:17 घंटे
दिनमान _____: 10:57:58 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 15:18:09 तुला
लग्न के अंश _____: 28:21:22 मिथुन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मिथुन - बुध
राशि-स्वामी _____: कुम्भ - शनि
नक्षत्र-चरण _____: पू०भाद्रपद - 1
नक्षत्र स्वामी _____: गुरु
योग _____: ध्रुव
करण _____: विष्टि
गण _____: मनुष्य
योनि _____: सिंह
नाड़ी _____: आद्य
वर्ण _____: शूद्र
वश्य _____: मानव
वर्ग _____: मेष
युँजा _____: अन्त्य
हंसक _____: वायु
जन्म नामाक्षर _____: से-सेनजित
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: रजत - लौह
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: वृश्चिक

पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1947	कार्तिक	10
पंजाबी	संवत : 2082	कार्तिक	16
बंगाली	सन् : 1432	कार्तिक	15
तमिल	संवत : 2082	आइपसी	16
केरल	कोल्लम : 1201	तुलम	15
नेपाली	संवत : 2082	कार्तिक	16
चैत्रादि	संवत : 2082	कार्तिक	शुक्ल 10
कार्तिकादि	संवत : 2082	कार्तिक	शुक्ल 10

पंचांग

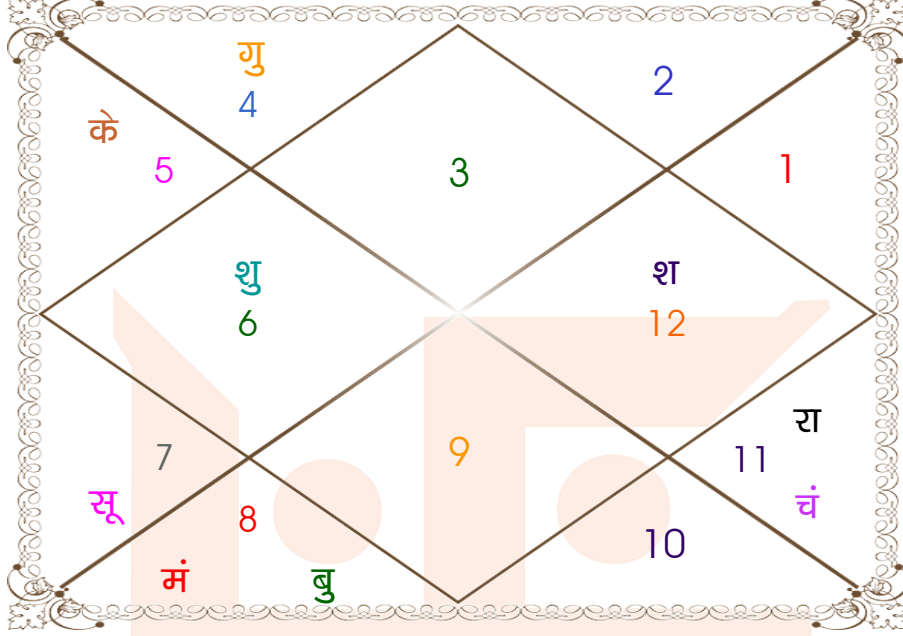
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 10
 तिथि समाप्ति काल _____ : 09:11:58
 जन्म तिथि _____ : 11
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : शतभिषा
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 18:20:26 घंटे
 जन्म योग _____ : पू०भाद्रपद
 सूर्योदय कालीन योग _____ : ध्रुव
 योग समाप्ति काल _____ : 26:09:11 घंटे
 जन्म योग _____ : ध्रुव
 सूर्योदय कालीन करण _____ : गर
 करण समाप्ति काल _____ : 09:11:58 घंटे
 जन्म करण _____ : विष्टि
 भयात _____ : 09:51:25
 भभोग _____ : 56:47:51
 भोग्य दशा काल _____ : गुरु 13 वर्ष 3 मा 3 दि

घात चक्र

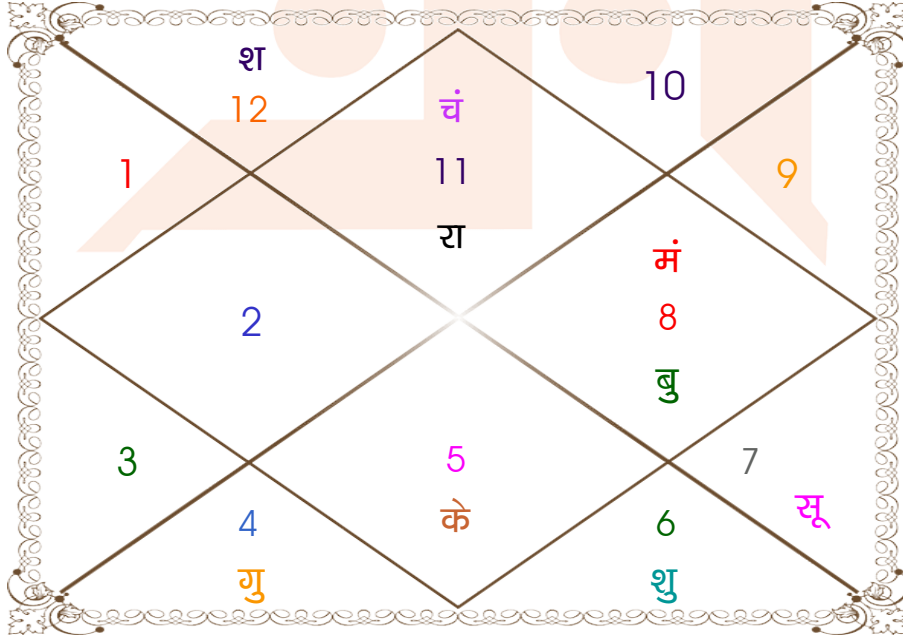
मास _____ : चैत्र
 तिथि _____ : 3-8-13
 दिन _____ : गुरुवार
 नक्षत्र _____ : आर्द्रा
 योग _____ : गण्ड
 करण _____ : किंस्तुघ्न
 प्रहर _____ : 3
 वर्ग _____ : श्वान
 लग्न _____ : मिथुन
 सूर्य _____ : वृष
 चन्द्र _____ : धनु
 मंगल _____ : मिथुन
 बुध _____ : वृष
 गुरु _____ : कर्क
 शुक्र _____ : सिंह
 शनि _____ : मेष
 राहु _____ : कन्या

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

श			ल
रा चं			गु
			के
	बु मं	सू	शु

लग्न कुंडली

ल		श
		रा चं
गु		
के	सू	मं बु
शु		

विंशोत्तरी
गुरु 13वर्ष 3मा 3दि
गुरु

01/11/2025

06/02/2143

गुरु	05/02/2039
शनि	05/02/2058
बुध	05/02/2075
केतु	05/02/2082
शुक्र	06/02/2102
सूर्य	06/02/2108
चन्द्र	06/02/2118
मंगल	05/02/2125
राहु	06/02/2143

योगिनी
भामरी 3वर्ष 3मा 23दि
भामरी

01/11/2025

24/02/2029

	01/11/2025
भद्रिका	25/02/2026
उल्का	26/10/2026
सिद्धा	06/08/2027
संकटा	26/06/2028
मंगला	05/08/2028
पिंगला	26/10/2028
धान्या	24/02/2029

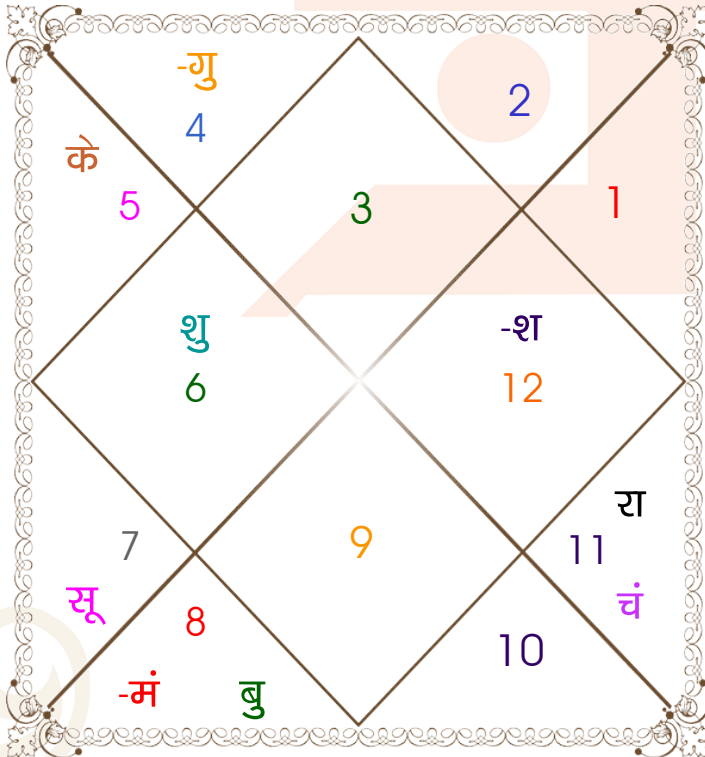
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मिथु	28:21:22	307:14:50	पुनर्वसु	3	7	बुध	गुरु	शुक्र	---
सूर्य			तुला	15:18:09	01:00:01	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	शुक्र	नीच राशि
चंद्र			कुंभ	22:16:58	13:56:08	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	शनि	सम राशि
मंगल			वृश्चि	03:44:56	00:42:48	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	स्वराशि
बुध			वृश्चि	08:48:13	00:50:15	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	शुक्र	सम राशि
गुरु			कर्क	00:46:10	00:01:57	पुनर्वसु	4	7	चंद्र	गुरु	मंगल	उच्च राशि
शुक्र			कन्या	29:13:12	01:15:00	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	शनि	नीच राशि
शनि	व		मीन	01:32:46	00:02:40	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	राहु	सम राशि
राहु			कुंभ	22:49:53	00:00:03	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	शनि	मित्र राशि
केतु			सिंह	22:49:53	00:00:03	पू०फाल्गुनी	3	11	सूर्य	शुक्र	शनि	शत्रु राशि
हर्ष	व		वृष	06:01:57	00:02:18	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	बुध	---
नेप	व		मीन	05:33:33	00:01:11	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	बुध	---
प्लूटो			मक	07:13:51	00:00:32	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	केतु	---
दशम भाव			मीन	17:46:18	--	रेवती	--	27	गुरु	बुध	बुध	--

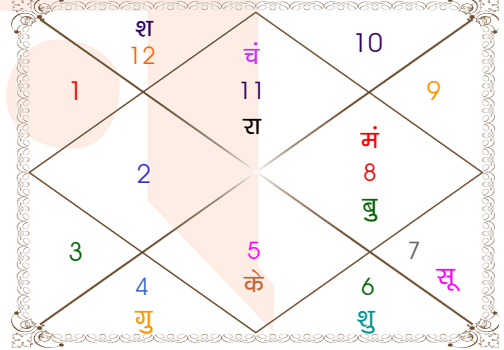
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 24:13:07

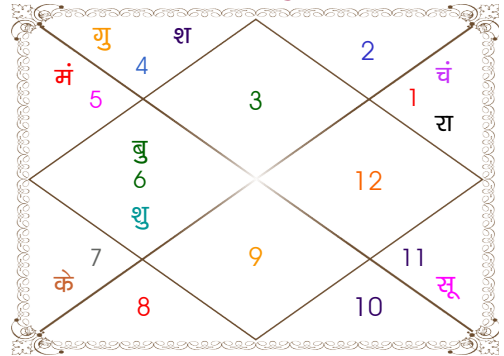
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मिथुन 11:35:31	मिथुन 28:21:22
2	कर्क 11:35:31	कर्क 24:49:40
3	सिंह 08:03:50	सिंह 21:17:59
4	कन्या 04:32:08	कन्या 17:46:18
5	तुला 04:32:08	तुला 21:17:59
6	वृश्चिक 08:03:50	वृश्चिक 24:49:40
7	धनु 11:35:31	धनु 28:21:22
8	मकर 11:35:31	मकर 24:49:40
9	कुम्भ 08:03:50	कुम्भ 21:17:59
10	मीन 04:32:08	मीन 17:46:18
11	मेष 04:32:08	मेष 21:17:59
12	वृष 08:03:50	वृष 24:49:40

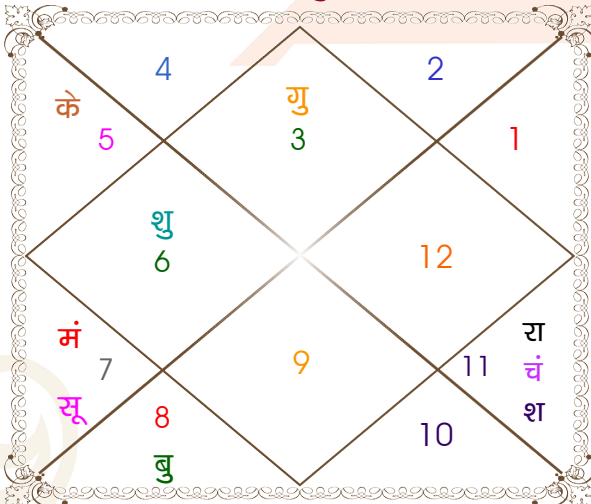
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मिथुन 28:21:22	
2	कर्क 20:54:24	
3	सिंह 16:47:58	
4	कन्या 17:46:18	
5	तुला 22:40:52	
6	वृश्चिक 27:13:21	
7	धनु 28:21:22	
8	मकर 20:54:24	
9	कुम्भ 16:47:58	
10	मीन 17:46:18	
11	मेष 22:40:52	
12	वृष 27:13:21	

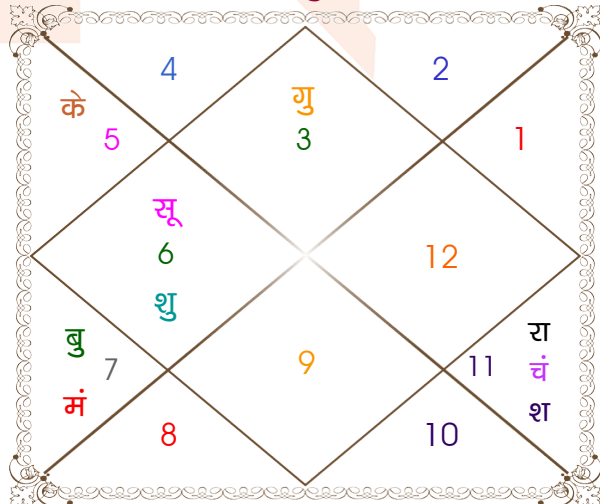
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 13 वर्ष 3 मास 3 दिन

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
01/11/2025	05/02/2039	05/02/2058	05/02/2075	05/02/2082
05/02/2039	05/02/2058	05/02/2075	05/02/2082	06/02/2102
01/11/2025	शनि 08/02/2042	बुध 03/07/2060	केतु 04/07/2075	शुक्र 06/06/2085
शनि 06/10/2027	बुध 18/10/2044	केतु 30/06/2061	शुक्र 02/09/2076	सूर्य 06/06/2086
बुध 11/01/2030	केतु 27/11/2045	शुक्र 30/04/2064	सूर्य 08/01/2077	चंद्र 05/02/2088
केतु 18/12/2030	शुक्र 26/01/2049	सूर्य 07/03/2065	चंद्र 09/08/2077	मंगल 06/04/2089
शुक्र 18/08/2033	सूर्य 08/01/2050	चंद्र 06/08/2066	मंगल 05/01/2078	राहु 06/04/2092
सूर्य 06/06/2034	चंद्र 10/08/2051	मंगल 03/08/2067	राहु 24/01/2079	गुरु 06/12/2094
चंद्र 06/10/2035	मंगल 17/09/2052	राहु 20/02/2070	गुरु 31/12/2079	शनि 05/02/2098
मंगल 11/09/2036	राहु 25/07/2055	गुरु 28/05/2072	शनि 07/02/2081	बुध 07/12/2100
राहु 05/02/2039	गुरु 05/02/2058	शनि 05/02/2075	बुध 05/02/2082	केतु 06/02/2102
सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष
06/02/2102	06/02/2108	06/02/2118	05/02/2125	06/02/2143
06/02/2108	06/02/2118	05/02/2125	06/02/2143	00/00/0000
सूर्य 26/05/2102	चंद्र 07/12/2108	मंगल 05/07/2118	राहु 20/10/2127	गुरु 26/03/2145
चंद्र 25/11/2102	मंगल 08/07/2109	राहु 23/07/2119	गुरु 14/03/2130	शनि 02/11/2145
मंगल 02/04/2103	राहु 06/01/2111	गुरु 28/06/2120	शनि 18/01/2133	00/00/0000
राहु 24/02/2104	गुरु 07/05/2112	शनि 07/08/2121	बुध 08/08/2135	00/00/0000
गुरु 13/12/2104	शनि 07/12/2113	बुध 04/08/2122	केतु 25/08/2136	00/00/0000
शनि 25/11/2105	बुध 08/05/2115	केतु 31/12/2122	शुक्र 26/08/2139	00/00/0000
बुध 01/10/2106	केतु 07/12/2115	शुक्र 01/03/2124	सूर्य 20/07/2140	00/00/0000
केतु 06/02/2107	शुक्र 07/08/2117	सूर्य 07/07/2124	चंद्र 18/01/2142	00/00/0000
शुक्र 06/02/2108	सूर्य 06/02/2118	चंद्र 05/02/2125	मंगल 06/02/2143	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 13 वर्ष 2 मा 20 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शनि 01/11/2025 06/10/2027	गुरु - बुध 06/10/2027 11/01/2030	गुरु - केतु 11/01/2030 18/12/2030	गुरु - शुक्र 18/12/2030 18/08/2033	गुरु - सूर्य 18/08/2033 06/06/2034
01/11/2025	बुध 01/02/2028	केतु 31/01/2030	शुक्र 30/05/2031	सूर्य 02/09/2033
बुध 28/12/2025	केतु 20/03/2028	शुक्र 29/03/2030	सूर्य 17/07/2031	चंद्र 26/09/2033
केतु 20/02/2026	शुक्र 05/08/2028	सूर्य 15/04/2030	चंद्र 06/10/2031	मंगल 13/10/2033
शुक्र 24/07/2026	सूर्य 15/09/2028	चंद्र 13/05/2030	मंगल 02/12/2031	राहु 26/11/2033
सूर्य 08/09/2026	चंद्र 23/11/2028	मंगल 02/06/2030	राहु 26/04/2032	गुरु 04/01/2034
चंद्र 24/11/2026	मंगल 11/01/2029	राहु 23/07/2030	गुरु 03/09/2032	शनि 19/02/2034
मंगल 17/01/2027	राहु 15/05/2029	गुरु 07/09/2030	शनि 04/02/2033	बुध 02/04/2034
राहु 05/06/2027	गुरु 02/09/2029	शनि 31/10/2030	बुध 22/06/2033	केतु 19/04/2034
गुरु 06/10/2027	शनि 11/01/2030	बुध 18/12/2030	केतु 18/08/2033	शुक्र 06/06/2034
गुरु - चंद्र 06/06/2034 06/10/2035	गुरु - मंगल 06/10/2035 11/09/2036	गुरु - राहु 11/09/2036 05/02/2039	शनि - शनि 05/02/2039 08/02/2042	शनि - बुध 08/02/2042 18/10/2044
चंद्र 17/07/2034	मंगल 26/10/2035	राहु 21/01/2037	शनि 29/07/2039	बुध 27/06/2042
मंगल 14/08/2034	राहु 16/12/2035	गुरु 18/05/2037	बुध 01/01/2040	केतु 23/08/2042
राहु 26/10/2034	गुरु 31/01/2036	शनि 03/10/2037	केतु 05/03/2040	शुक्र 03/02/2043
गुरु 30/12/2034	शनि 25/03/2036	बुध 05/02/2038	शुक्र 04/09/2040	सूर्य 24/03/2043
शनि 17/03/2035	बुध 12/05/2036	केतु 28/03/2038	सूर्य 29/10/2040	चंद्र 14/06/2043
बुध 25/05/2035	केतु 01/06/2036	शुक्र 21/08/2038	चंद्र 28/01/2041	मंगल 11/08/2043
केतु 23/06/2035	शुक्र 28/07/2036	सूर्य 04/10/2038	मंगल 02/04/2041	राहु 05/01/2044
शुक्र 12/09/2035	सूर्य 14/08/2036	चंद्र 16/12/2038	राहु 14/09/2041	गुरु 15/05/2044
सूर्य 06/10/2035	चंद्र 11/09/2036	मंगल 05/02/2039	गुरु 08/02/2042	शनि 18/10/2044
शनि - केतु 18/10/2044 27/11/2045	शनि - शुक्र 27/11/2045 26/01/2049	शनि - सूर्य 26/01/2049 08/01/2050	शनि - चंद्र 08/01/2050 10/08/2051	शनि - मंगल 10/08/2051 17/09/2052
केतु 10/11/2044	शुक्र 07/06/2046	सूर्य 13/02/2049	चंद्र 25/02/2050	मंगल 02/09/2051
शुक्र 17/01/2045	सूर्य 04/08/2046	चंद्र 14/03/2049	मंगल 31/03/2050	राहु 02/11/2051
सूर्य 06/02/2045	चंद्र 09/11/2046	मंगल 03/04/2049	राहु 26/06/2050	गुरु 26/12/2051
चंद्र 12/03/2045	मंगल 15/01/2047	राहु 25/05/2049	गुरु 11/09/2050	शनि 28/02/2052
मंगल 04/04/2045	राहु 08/07/2047	गुरु 10/07/2049	शनि 12/12/2050	बुध 25/04/2052
राहु 04/06/2045	गुरु 09/12/2047	शनि 03/09/2049	बुध 04/03/2051	केतु 19/05/2052
गुरु 28/07/2045	शनि 09/06/2048	बुध 22/10/2049	केतु 06/04/2051	शुक्र 25/07/2052
शनि 30/09/2045	बुध 20/11/2048	केतु 11/11/2049	शुक्र 12/07/2051	सूर्य 15/08/2052
बुध 27/11/2045	केतु 26/01/2049	शुक्र 08/01/2050	सूर्य 10/08/2051	चंद्र 17/09/2052

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	3
मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 3
शत्रु अंक	5, 6
शुभ वर्ष	19, 28, 37, 46, 55
शुभ दिन	बुध, शुक्र, शनि
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
मित्र राशि	वृष, तुला
मित्र लग्न	कन्या, कुम्भ, मेष
अनुकूल देवता	कुबेर
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी



FUTUREPOINT
Astro Solutions

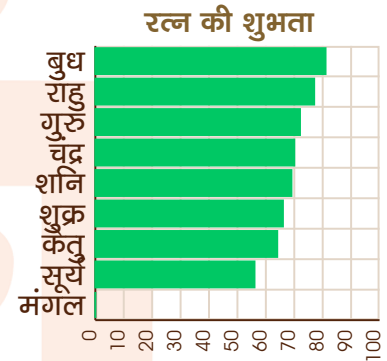


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	81%	शत्रु व रोग मुक्ति, स्वास्थ्य, सुख
गोमेद	राहु	77%	भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति
पुखराज	गुरु	72%	धन, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
मोती	चंद्र	70%	भाग्योदय, धन
नीलम	शनि	69%	व्यावसायिक उन्नति, दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय
हीरा	शुक्र	66%	सुख, कम खर्च, सन्तति सुख
लहसुनिया	केतु	64%	पराक्रम, सन्तति सुख
माणिक्य	सूर्य	56%	सन्तति सुख, पराक्रम
मूंगा	मंगल	0%	शत्रु व रोग, हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	05/02/2039	62%	77%	6%	69%	84%	53%	69%	77%	64%
शनि	05/02/2058	38%	58%	0%	88%	72%	72%	81%	83%	52%
बुध	05/02/2075	62%	58%	0%	94%	72%	72%	69%	77%	64%
केतु	05/02/2082	38%	58%	6%	81%	72%	72%	56%	64%	77%
शुक्र	06/02/2102	38%	58%	0%	88%	72%	78%	75%	83%	70%
सूर्य	06/02/2108	69%	77%	6%	81%	78%	53%	56%	64%	52%
चंद्र	06/02/2118	62%	83%	0%	88%	72%	66%	69%	64%	52%
मंगल	05/02/2125	62%	77%	18%	69%	78%	66%	69%	64%	70%
राहु	06/02/2143	38%	58%	0%	81%	72%	72%	75%	89%	52%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	01/11/2025-03/06/2027 20/10/2027-23/02/2028	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	08/08/2029-05/10/2029 17/04/2030-31/05/2032	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	22/10/2038-05/04/2039 13/07/2039-28/01/2041 06/02/2041-26/09/2041	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	06/03/2049-10/07/2049 04/12/2049-25/02/2052	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	14/05/2054-02/09/2054 05/02/2055-07/04/2057	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/05/2059-11/07/2061 13/02/2062-07/03/2062	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	15/01/2079-12/04/2081 03/08/2081-07/01/2082	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	12/04/2081-03/08/2081 07/01/2082-20/03/2084	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	20/03/2084-21/05/2086 21/05/2086-08/02/2087	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	18/07/2088-31/10/2088 05/04/2089-19/09/2090 25/10/2090-21/05/2091	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/10/2097-02/05/2098 20/06/2098-26/12/2099 17/03/2100-16/09/2100	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	25/02/2108-29/07/2108 23/11/2108-17/02/2111	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	17/02/2111-02/05/2113 22/09/2113-26/01/2114	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया

फल

शुभ
सम
सम
सम
शुभ

क्षेत्र

व्यावसाय
कम खर्च
सुख
दुर्घटना से बचाव
भाग्योदय



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति षष्ठ भाव में है। षष्ठ भाव शत्रु रोग, ऋण आदि का प्रतिनिधि भाव है अतः इस भाव में मंगल के प्रभाव से आप एक पराकमी पुरुष होंगे तथा शत्रु वर्ग को पराजित करने में समर्थ रहेंगे साथ ही शरीर में रोगाभाव रहेगा तथा सामान्यतया आप स्वस्थ ही रहेंगे। आप पराकमी एवं कठोर कार्यों को करने में रुचिशील रहेंगे। अतः आप पुलिस सेना या अन्य पराकमी विभागों में कार्यरत भी हो सकते हैं। जीवन में आपको ऋण अल्प मात्रा में ही लेना पड़ेगा तथा यदि लेना भी पड़ा तो आप इसे वापस देने में समर्थ रहेंगे जिससे मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा बनी रहेगी। साथ ही आप जीवन में इच्छित धन ऐश्वर्य एवं लाभ भी अर्जित करेंगे। आपके प्रभावी व्यक्तित्व से अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे।

षष्ठ भाव से नवम भाव पर मंगल की चतुर्थ दृष्टि के प्रभाव से आप धर्म या धार्मिक कार्यों पर अल्प मात्रा में ही रुचि रखेंगे साथ ही भाग्य की अपेक्षा आप कर्म पर अधिक विश्वास करेंगे। अतः आपके सांसारिक कार्यों की सिद्धि भाग्य बल की अपेक्षा परिश्रम पूर्वक कार्य करने से ही पूर्ण होगी। द्वादश भाव पर सप्तम दृष्टि के प्रभाव से आपका व्यय अधिक होगा। साथ ही यदा कदा आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधानों का भी सामना करना पड़ेगा परन्तु दाम्पत्य सुख का आप सामान्य रूप से उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। लग्न पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप समय समय पर गर्मी या रक्त विकार संबंधी परेशानी की अनुभूति करेंगे लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप अपने कार्यों को उत्साह पराकम एवं परिश्रम से सम्पन्न करके उनमें इच्छित सफलताएं अर्जित करेंगे।

इस प्रकार षष्ठ भावस्थ मंगल की स्थिति आपके लिए सामान्यतया अच्छी रहेगी जिसके प्रभाव से आप धनऐश्वर्य से युक्त रहेंगे तथा अपने परिवार का आधुनिक परिवेश में

लालन पालन करने में समर्थ होंगे जिससे पारिवारिक सुख शान्ति बनी रहेगी तथा पारिवारिक जनों से आप पूर्ण सहयोग सुख एवं सम्मान प्राप्त होगा। अतः आप प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- सूर्य पंचम भाव में स्थित है तथा उस पर राहु का प्रभाव है ।
- चन्द्र नवम भाव में स्थित है तथा उस पर राहु का प्रभाव है ।
- पंचम भाव में नीच का सूर्य स्थित है ।
- पंचम भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य, चन्द्र और शुक्र के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में सूर्य पितृदोष कारक ग्रह है अतः पिता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गायत्री जप, सूर्योपासना, आदित्यहृदय स्तोत्र का पाठ, आक की समिधा से हवन करें । रविवार को गाय या बैल को गेहूँ और गुड़ खिलाएं ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान



FUTUREPOINT
Astro Solutions



करें।

आपकी कुंडली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें। 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह फल

सूर्य

पंचमभाव में सूर्य हो तो जातक अल्पसन्तितिवान्, बुद्धिमान्, सदाचारी, रोगी, दुखी, शीघ्र क्रोधी एवं वंचक होता है।

तुला राशि में रवि हो तो जातक मन्दाग्नि रोगी, आत्मबलहीन, मलीन व्यभिचारी, परदेशाभिलाषी, नैतिकता की कमी एवं दूसरों से दबने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रुचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

चन्द्र

नवेंभाव में चन्द्रमा हो तो जातक विद्वान्, विद्याप्रिय, चंचल, न्यायी, प्रवास-प्रिय, कार्यशील, धर्मात्मा, सन्तति-सम्पत्तियुक्त सुखी, साहसी एवं अल्पभ्रातृवान् होता है।

कुम्भ राशि में चन्द्रमा हो तो जातक, उन्मत्त, सूक्ष्मदेही, शिल्पी, नीति दक्ष, दूरदर्शी, विद्वान्, गुप्तविद्याओं में रुचि, अच्छा अन्तर्ज्ञान, साधना करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति वाला एवं मध्यावस्था में संन्यास के प्रति झुकाव होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। आपके शुभ प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपकी सुख संसाधनों के प्रति वे चिन्तित रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक आपको इन सुख संसाधनों का उपभोग करायेंगी। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। इसके अतिरिक्त उन्हीं की सहायता एवं सहयोग से आप आवश्यक सुखसंसाधनों को भी प्राप्त करेंगे।

आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा पूर्ण रूप से उनका हार्दिक सम्मान करेंगे। जीवन में उनको पूर्ण सुख सुविधा प्रदान करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर होंगे तथा यदा कदा ही कोई मतभेद रहेंगे अन्यथा एक दूसरे से सहमत ही रहेंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के लिए सामान्य शुभ रहेंगे।

मंगल

छठेभाव में मंगल हो तो जातक बलवान्, धैर्यशाली, प्रबल जठराग्नि, कुलवन्त, प्रचण्ड शक्ति, शत्रुहन्ता, ऋणी, दादरोगी, कोधी, पुलिस अफसर, व्रण और रक्तविकार युक्त एवं अधिकव्यय करने वाला होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल छठे भाव में है अतः भाईयों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से अस्वस्थ रहेंगे। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा। जीवन में वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों तथा क्षेत्र में आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं अपनी ओर से आपको किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगे। साथ ही शत्रुवर्ग से भी वे आपकी नित्य रक्षा करने में तत्पर रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा एवं हमेशा उनको अपना सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी आपसी संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सामान्य रूप से मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में क्षणिक तनाव की स्थिति रहेगी परन्तु कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप सुख दुःख में उनकी वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से भी सहयोग देंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी भलाई करने में तत्पर रहेंगे।

बुध

षष्ठभाव में बुध हो तो जातक विवेकी, कलहप्रिय, वादी, रोगी, आलसी, अभिमानी, परिश्रमी, कामी, दुर्बल एवं स्त्रीप्रिय होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मुखर्ष, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिक्रिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

गुरु

द्वितीयभाव में गुरु हो तो जातक मधुरभाषी, सम्पत्ति और सन्ततिवान्, सुन्दरशरीर, सदाचारी, पुण्यात्मा, सुकार्यरत, लोकमान्य, राज्यमान्य, व्यवसायी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं भाग्यवान् होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुक्र

चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो जातक बलवान्, परोपकारी, सुन्दर, व्यवहार कुशल, विलासी, दीर्घायु, पुत्रवान्, भाग्यवान्, सुखी, दानी, वाहनों का स्वामी एवं आस्तिक होता है।

कन्या राशि में शुक्र हो तो जातक, सुखी, भोगी, अतिकामी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, सट्टे द्वारा धननाशक एवं अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

शनि

दशम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान्, ज्योतिषी, राजयोगी, न्यायी, नेता, धनवान्, राजमान्य, उदरविकारी, अधिकारी, चतुर, भाग्यवान् परिश्रमी, निरुद्पयोगी एवं महत्वाकांक्षी होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

नवम भाव में राहु हो तो जातक प्रवासी, वातरोगी, व्यर्थ परिश्रमी, दुष्टबुद्धि, भाग्योदय से रहित, तीर्थाटनशील एवं धर्मात्मा होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

तृतीय भाव में केतु हो तो जातक चंचल, वायुजनित रोगों से पीड़ित, भाई बहन विहीन, धनी, व्यर्थवादी एवं भूतप्रेतभक्त होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- गुरु
(01/11/2025 - 05/02/2039)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 01/11/2025 को आरम्भ तथा 05/02/2039 को समाप्त होगी। इसकी अवधि सोलह वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में गुरु द्वितीय भाव में स्थित है। इस तरह वह भाव को शक्ति प्रदान कर रहा है। द्वितीय भाव सम्पत्ति, भाग्य, दायीं आँख, स्मरणशक्ति, कल्पना, जिह्वा, दाँत, दाढ़ी और पारिवारिक सदस्यों का द्योतक है। गुरु एक शुभ ग्रह है जो आपकी जन्मकुण्डली में द्वितीय भाव में स्थित है। इसकी छठे, आठवें और दसवें भाव पर दृष्टि है और इन भावों पर इसका शुभ प्रभाव है। अतः 16 वर्षों की यह दशा सुखमय और समृद्धिशाली होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु की द्वितीय भाव में स्थिति और वहाँ से (दशम भाव के अतिरिक्त) छठे तथा 8वें भावों अर्थात् रोग और शत्रु के भावों तथा दीर्घायु के भावों पर इसकी दृष्टि के कारण आपको कोई गम्भीर बीमारी नहीं होगी और आप इस दशा के दौरान स्वस्थ रहेंगे।

अर्थ-सम्पत्ति :

गुरु की द्वितीय भाव में स्थिति और दसवें भाव (6ठे तथा 8वें भावों के अतिरिक्त) पर इसकी दृष्टि के कारण इस दशा के दौरान आप चल-अचल सम्पत्ति प्राप्त करेंगे और आराम तथा विलासिता की वस्तुओं पर व्यय करेंगे।

व्यवसाय :

गुरु की द्वितीय अर्थात् धन-सम्पत्ति के भाव में स्थिति और वहाँ से (6ठे तथा 8वें भावों के अतिरिक्त) दसवें अर्थात् व्यवसाय तथा जीवन चर्चा के भाव पर इसकी दृष्टि के कारण आप अपने व्यवसाय में प्रतिष्ठित होंगे। आप कवि, महान् लेखक, ज्योतिषी अथवा वैज्ञानिक हो सकते हैं। आप सफल, प्रतिष्ठित और भाग्यशाली होंगे। आप किसी से झगड़ा नहीं करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

गुरु के कारण आपका पारिवारिक जीवन सुखमय और सद्भावपूर्ण रहेगा। आपके जीवनसाथी आपके सहयोगी और सहायक होंगे। आपके बच्चे आज्ञाकारी और सुशील होंगे। 16 वर्ष की इस दशा के दौरान आपको कोई पारिवारिक समस्या नहीं होगी और आप पारिवारिक जीवन का आनन्द उठाएंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

ज्ञान की भूख के कारण आप विभिन्न साहित्यों के अध्ययन में रत रहेंगे।

**अंतर्दशा :- गुरु - गुरु
(01/11/2025 - 01/11/2025)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 01/11/2025 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 01/11/2025 को प्रारंभ होकर 01/11/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी; धन, संचित होगा। पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा। खुशियां मिलेंगी; किस्मत चमकेगी। उत्तम वस्त्र आदि से सुशोभित रहेंगे; सब सुविधाएं होंगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। तंत्र-मंत्र में रुचि ले सकते हैं। अध्यात्म में रुचि होगी। मातहतों और किरायेदारों से लाभ हो सकता है। उत्तम नौकरी मिल सकती है; कार्यालय उत्तम रहेगा। कार्यक्षेत्र में तरक्की होगी, प्रसिद्धि मिलेगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे।

आपके जीवनसाथी को अप्रत्याशित धनलाभ हो सकता है। आपके पिता को शत्रुओं और स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। माता धनी और सफल बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए यात्रा, खर्च, शत्रुओं पर विजय, अचल संपत्ति की प्राप्ति, धन और उत्तम शिक्षा का संकेत है।

आपकी संतान सफलता प्राप्त करेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे; सरकार से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो धनलाभ उत्तम होगा; भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाताओं को निवेश से लाभ होगा; किस्मत चमकेगी। व्यापारियों के कार्य में परिवर्तन हो सकता है; अप्रत्याशित लाभ संभव है।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। खानपान पर ध्यान दें, नेत्रों की देखभाल करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीला गुड़, पीले वस्त्र, हल्दी और पुस्तकें दान में दें।

**अंतर्दशा :- गुरु - शनि
(01/11/2025 - 06/10/2027)**

आपकी बृहस्पति की महादशा 01/11/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 12 दिन रहेगी। आपके लिए यह 01/11/2025 को प्रारंभ होकर 06/10/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्ध होंगे। समाज में सम्मान में वृद्धि होगी। धनी बनेंगे, कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। विदेश यात्रा हो सकती है। सरकारी तंत्र से लाभ होगा। नौकरी या व्यापार में परिवर्तन हो सकता है। आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। शत्रुओं और स्पर्धियों पर विजय होगी। पर्दे के पीछे खूब परिश्रम करेंगे। धन संचित होगा।

आपके जीवनसाथी की अचल संपत्ति में वृद्धि हो सकती है; घरेलू सुख और साधन उपलब्ध रहेंगे। आपके पिता की आय में वृद्धि होगी। माता को साझेदारी से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए धन या संपत्ति का अचानक लाभ, अधिक खर्च, उत्तम आय और शत्रुओं पर विजय का संकेत है।

आपकी संतान को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो मातहत सहयोग करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे, मुकदमे में विजय होगी। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी, धन संचित होगा। व्यापारियों का लाभ उत्तम होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। कान और शरीर के निचले अंगों का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए तेल, तिल, काले वस्त्र और काले जूते दान करें।

उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाता सफल और प्रसिद्ध होंगे। व्यापारियों की आय अच्छी होगी, निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए शिवजी की भैरव रूप में उपासना करें।

अंतर्दशा :- गुरु - बुध
(06/10/2027 - 11/01/2030)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 01/11/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तृतीय अंतर्दशा बुध की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 06/10/2027 को प्रारंभ होकर 11/01/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धि, स्मृति और हाज़िरजवाबी का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम होंगे। शत्रुओं पर विजय होगी। शिक्षा में सफलता मिलेगी। मानसिक और घरेलू सुख रहेगा। सम्मान में वृद्धि होगी। मामापक्ष के लोगों से लाभ होगा। सहकर्मी और किरायेदार सहयोग करेंगे। शुभकार्यों और दान-धर्म आदि पर खर्च बढ़ेंगे। मुकदमे में जीत होगी। ध्यान और अध्यात्म में रुचि होगी। यात्रा हो सकती है।

आपके जीवनसाथी की यात्रा हो सकती है, परिवर्तन और खर्च की संभावना है। आपकी माता की बुद्धिमत्ता बढ़ेगी। पिता कार्यक्षेत्र में सफल होंगे। आपके भाई-बहनों के लिए उत्तम शिक्षा, अचल संपत्ति, उच्चपद, उत्तम स्वास्थ्य का संकेत है।

आपकी संतान भाषण प्रतियोगिता में सफल हो सकती है, शिक्षा में प्रगति होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो घरेलू सुख उत्तम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो विरोधियों पर विजयी रहेंगे। परामर्शदाता धनी बनेंगे। व्यापारियों के खर्च बढ़ेंगे, यात्राएं होंगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। त्वचा और स्नायुतंत्र की मामूली तकलीफ हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध मंत्र का जाप करें।

ॐ बुं बुधाय नमः



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com